जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव दौसा जिले के संदर्भ में

डॉ जगफूल मीना

व्याख्याता भूगोल विभाग,राजकीय स्ना. महाविद्यालय
राजगढ़,अलवर, राजस्थान

सारांश

"स्वर्ण से नही वरन् केवल स्त्रियों और पुरूषों से एक राष्ट्र मजबूत और महान बनता हैं। सत्य और सम्मान की खातिर जो डटे रहते है और कष्ट झेलते है जो परिश्रम करते हैं जब अन्य निद्रोमग्न होते है, जो साहस दिखाते हैं जब अन्य भाग खडे होते हैं, वही लोग राष्ट्र के स्तभों की गहरी नीव डालते हैं और आकाश तक उसे ऊँचा उठाते हैं।

– राल्फ वाल्डो इमरसन

किसी देश के निवासी उस राष्ट्र की वास्तविक सम्पति होती है। यही लोग देश के संसाधनों का समूचित उपयोग करते है और नीतियों का निर्माण करते है।

अतः एक देश की पहचान उस राष्ट्र में निवास करने वाले लोगो से होती हैं।

विश्व जगत की तेजी से बढ़ती जनसंख्या द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग करने के कारणप्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र गति से विदोहन हो रहा हैं। इस तीव्रगति से दोहन का परिणाम, जैव विविधता में कमी, मृदा, जल, भूमि व वायु स्त्रोतों के प्रदूषण के रूप में दिखाई पड़ रहा हैं। तीव्र गति से दोहन के कारण पर्यावरण अवनयन के चलते मानव जाति तथा उसकी उत्तरजीविता के लिए अनेक खतरे उत्पन्न कर रहा हैं।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि पर्यावरण अवनयन का प्रमृख कारक हैं। जनसंख्या प्रदूषण भी बढ़ रहा हैं। इस कारण अध्ययन क्षेत्र शोध के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता हैं।

मुख्य शब्द

जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, लवणीय सान्द्रता, जलवायु परिवर्तन, बेरोजगारी।

उद्देश्य

1. जनसंख्या व पर्यावरण के मध्य असन्तुलन का विश्लेषण करना।
2. जनसंख्या को नियंत्रित तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु विवेचन करना।

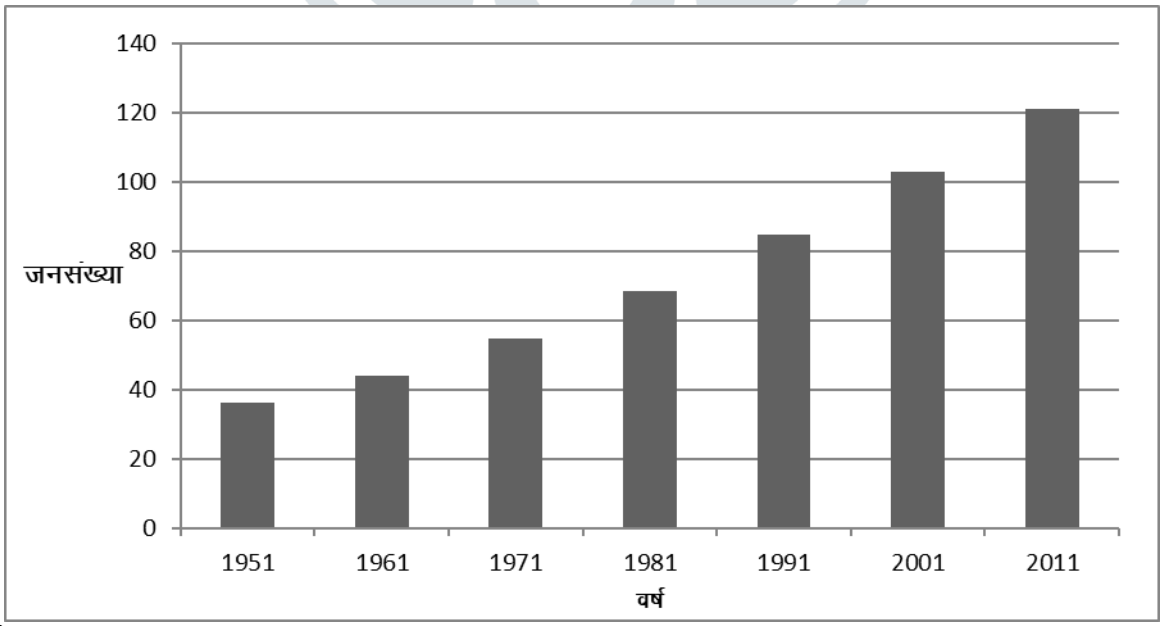

शोध विधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध मुख्यतः द्वितीयक आंकडों पर आधारित हैं। प्रस्तुत शोध में आंकडो का एकत्रीकरण व संकलन विभिन्न कार्यालय से प्राप्त दस्तावेजों, पुस्तकों, प्रलेखों तथा अन्य प्रकाशनों से किया गया हैं।

प्रस्तावना

बढ़ती जनसंख्या की भयानकता का सीधा प्रभाव प्रकृति पर पड़ता है। जनाधिक्य की समस्या से पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ जाता हैं। आज विश्व में जनाधिक्य की समस्या ने भयानक रूप धारण कर लिया है। वर्ष 2011 में विश्व की कुल जनसंख्या 7 अरब को पार कर चुकी थी। ऐसा माना जाता है कि वर्ष 2050 में 9.7 अरब तथा वर्ष 2075 तक 10 अरब विश्व की जनसंख्या होने का अनुमान है।

विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश चीन है। उसके पश्चात भारत जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान रखता हैं। लेकिन भारत का क्षेत्रफल विश्व का लगभग 2.4 प्रतिशत हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत मे विश्व की 17. 5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती हैं। भारत का कुल क्षेत्रफल 3287263 वर्ग किलोमीटर हैं। अतः भारत में जनाधिक्य स्पष्ट दृष्टिगोचर हैं।

भारत की जनसंख्या वृद्धि

(जनसंख्या करोडों में)

वर्ष	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
जनसंख्या	36.10	43.92	54.81	68.33	84.64	102.87	121

स्त्रोतः–NCERT

भारत की जनसंख्या

(अनुमानित जनसंख्या करोडों मे)

वर्ष	2020	2025	2030	2035	2040	2045	2050
जनसंख्या	138	144	150	155	159	162	163

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है राजस्थान में भारत की कुल जनसंख्या की 5.5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती हैं।

स्त्रोतः–वर्ल्डोमीटर

राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि

(जनसंख्या करोडों में)

वर्ष	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
जनसंख्या	1.59	2.01	2.57	3.42	4.40	5.65	6.85

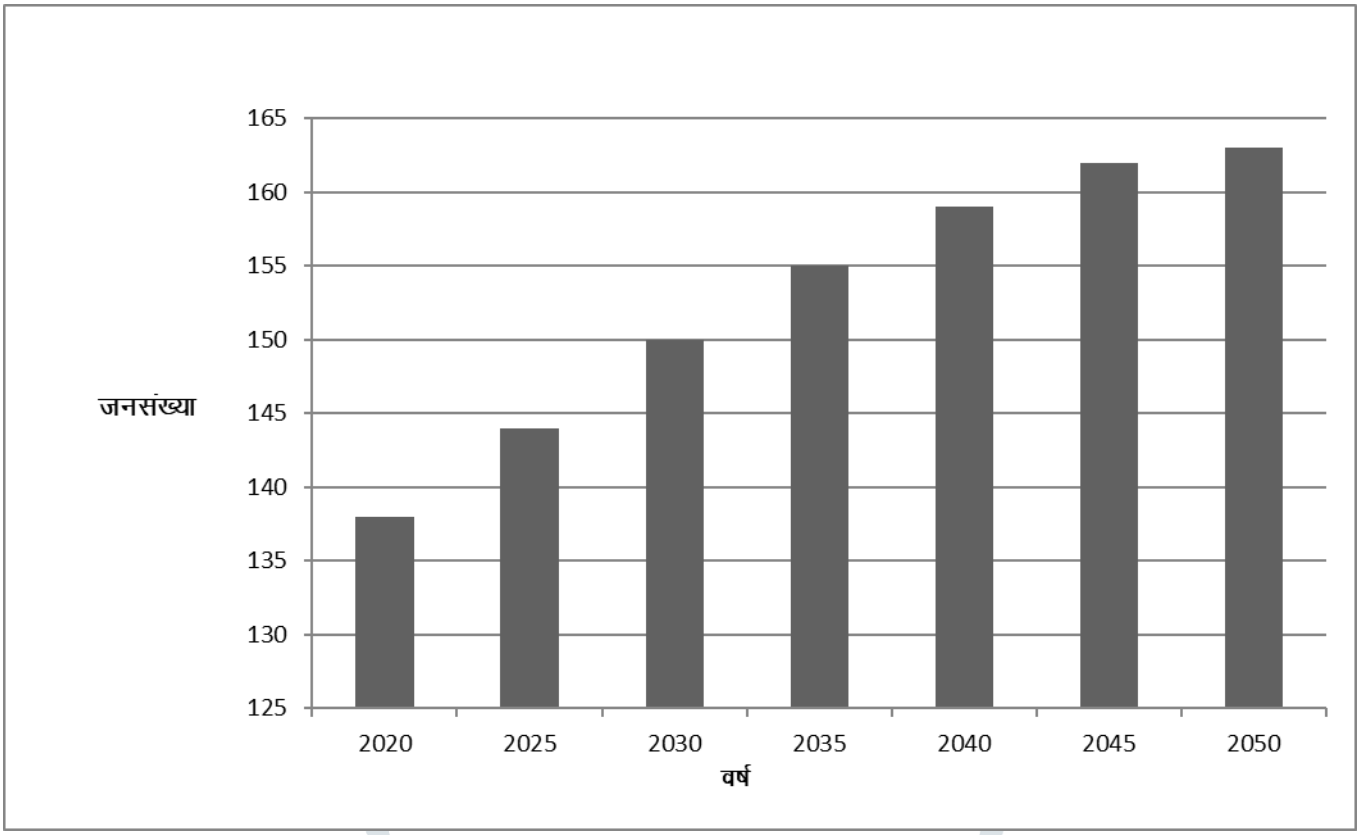

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट हो जाता है कि भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बड़ रही हैं। राजस्थान की जनसंख्या वर्ष 1951 में 1.59 करोड़ थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 6.85 करोड़ हो गयी।

अध्ययन क्षेत्र दौसा में भी जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ रही हैं। वर्ष 2001 में 13.17 लाख जनसंख्या थी, जो वर्ष 2011 में बड़कर 16.34 लाख हो गयी।बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया जाता है। जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ता हैं। इस कारण अध्ययन क्षेत्र का अध्ययन करना अति आवश्यक हो जाता है।

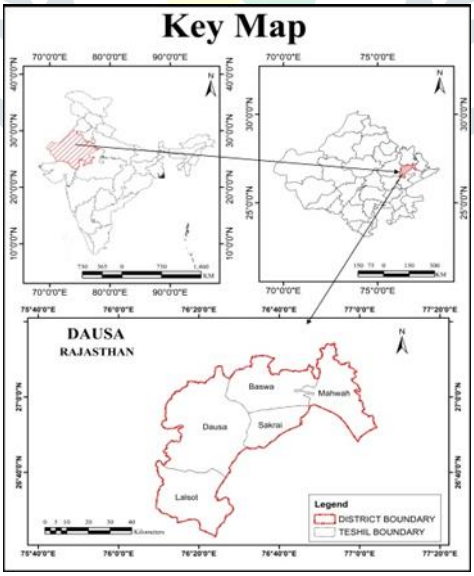

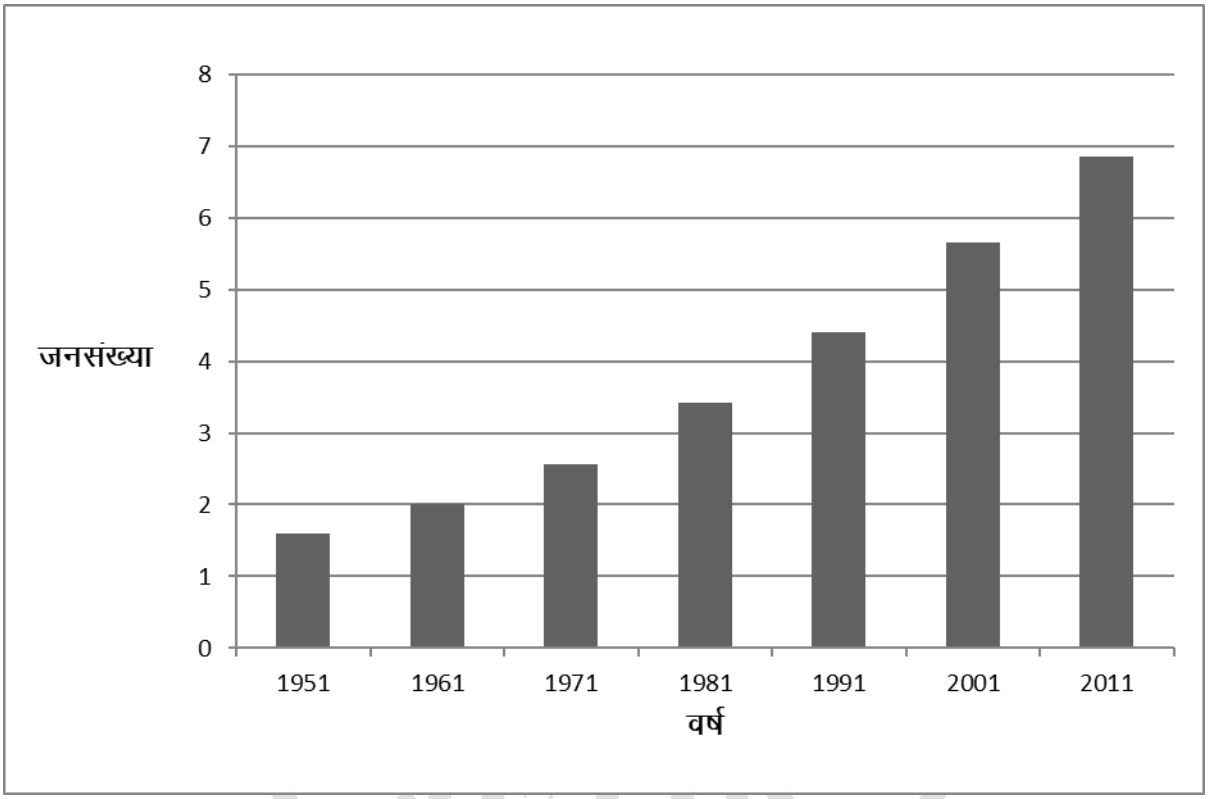

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य का दौसा जिला है जिसकी अवस्थिति 26 डिग्री 22 मिनट उतरी अक्षांश से 27 डिग्री 50 मिनट उतरी अक्षांश तक तथा 76 डिग्री 53 मिनट से 78 डिग्री 16 मिनट पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। दौसा जिले को जयपुर से पृथक कर10 अप्रैल 1991 को नया जिला बनाया गया।

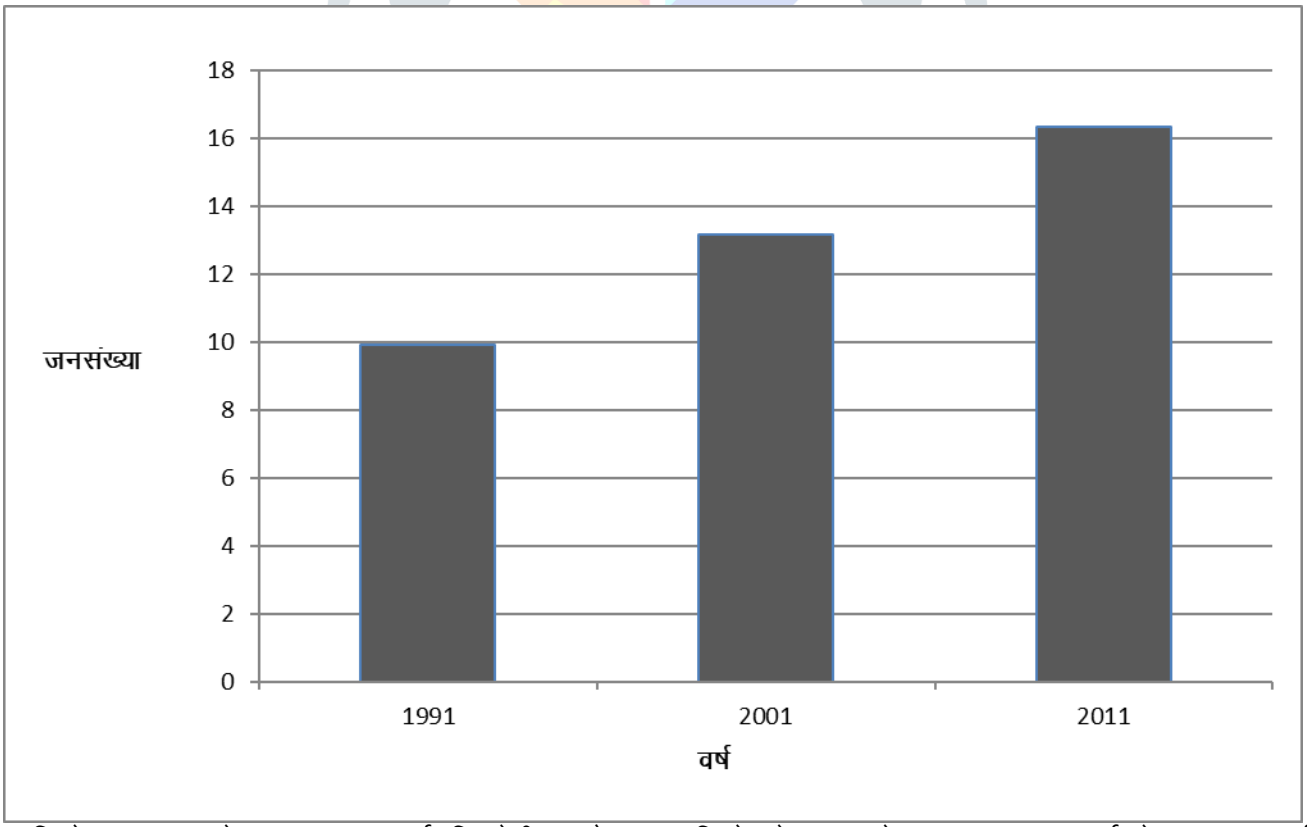

दौसा जिले का कुल क्षेत्रफल 3432 वर्ग किलोमीटर है। इस जिलें के उतर में अलवर, उतर–पूर्व में भरतपुर, पूर्व में करौली–सवाईमाधोपुर, दक्षिण में टोक एवं पश्चिम में जयपुर जिलें से सीमा लगती है।

जिले में 8 उपखण्ड तथा 5 तहसीलें है। जिले मे गाँवों की कुल संख्या 1109 है। जिनमें 1079 गाँव आबाद तथा 30 गाँव गैर–आबाद है। जिलें में कुल कस्बों की संख्या 5 है।जनांकिकीय का अध्ययन पर्यावरण परिवर्तन की स्थिति को निर्धारित करने में अहम भूमिका रखता हैं। इस अध्याय में जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया हैं।

दौसा की जनसंख्या वृद्धि

(जनसंख्या लाखो में)

वर्ष	1991	2001	2011
जनसंख्या	9.9	13.17	16.34

स्त्रोतः–जनसंख्या प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

दौसा की दशकीय वृद्धि दर

(जनसंख्या प्रतिशत में)

वर्ष	1991	2001	2011
जनसंख्या	30.81	32.44	24.9

स्त्रोतः–जन संख्या प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

दौसा जिले में जनसंख्या का वितरण

तहसील	बसवा	महुवा	सिकराय	दौसा	लवाण	नंगलराजावतन	लालसोट	रामगढ़ पंचवारा
जनसंख्या	338878	264667	260484	264105	61951	94881	234224	115219

स्त्रोतः–जनसंख्या प्रतिवेदन 2011, राजस्थान

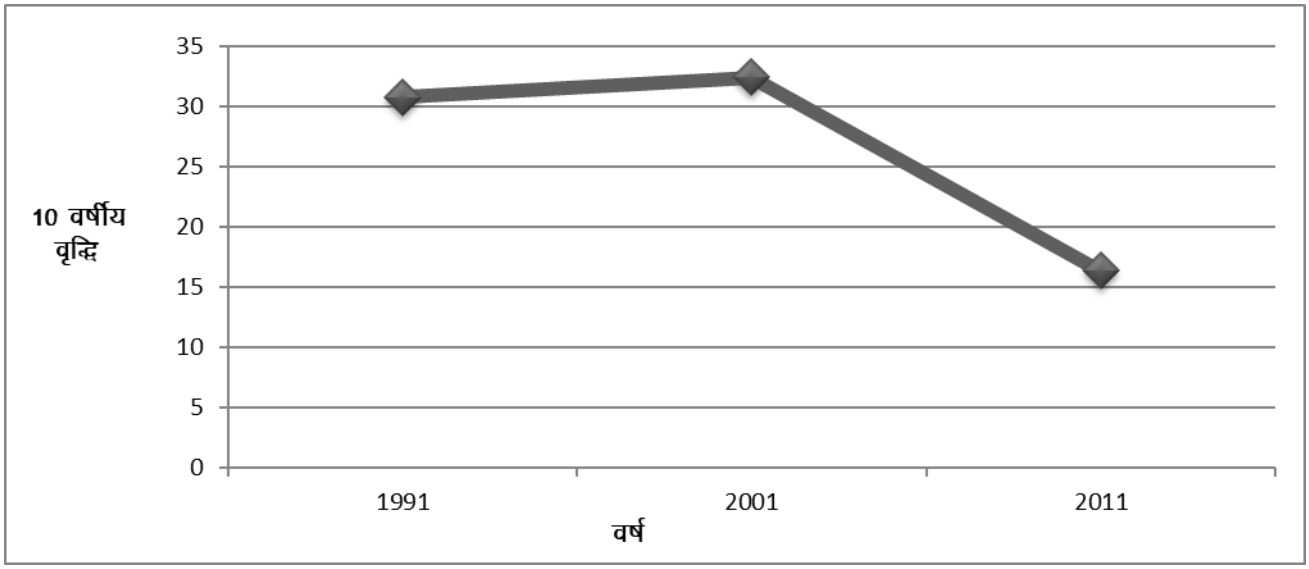

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट हो रहा है कि दौसा जिले की जिले की जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ रही है तथा जिले के संसाधन सीमित है। जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा हैं।

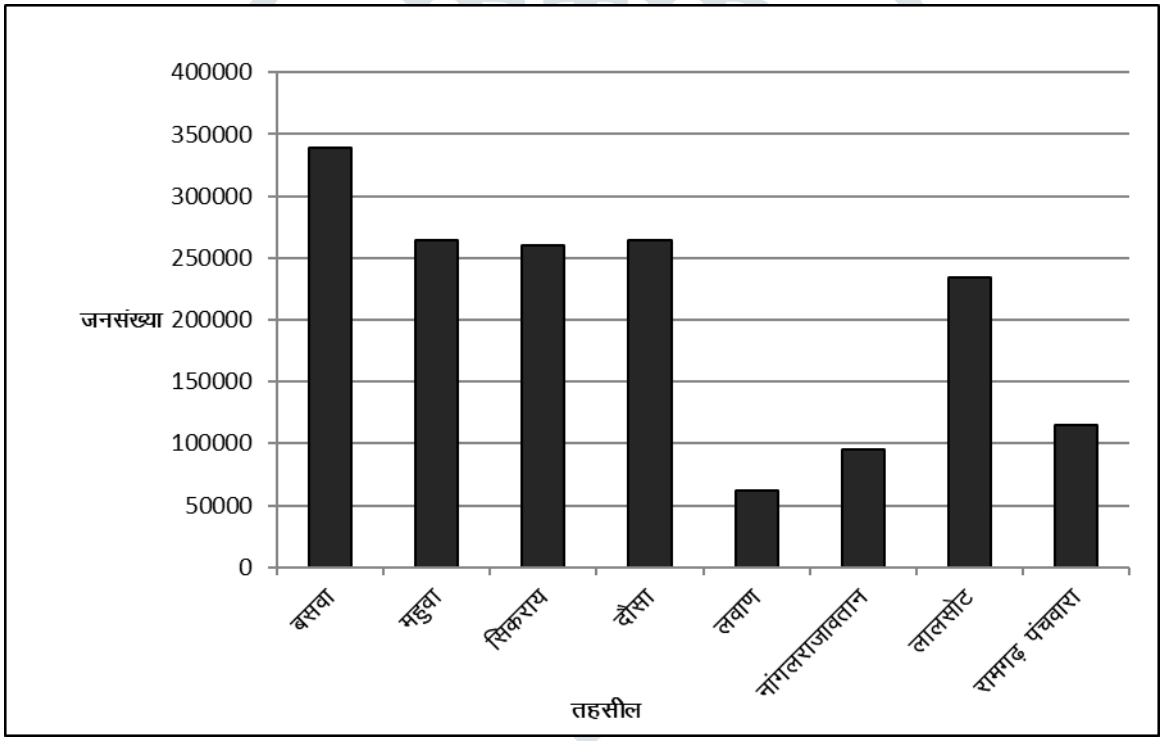

अध्ययन क्षेत्र पर प्रभाव

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या की गंभीर समस्या हैं। जिले की दशकीय वृद्धि दर 24.9 प्रतिशत है जो बहुत अधिक है। जिलें में वर्ष 2001 के मे जनसंख्या 13.17 लाख थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 16.34 लाख हो गई हैं। जिले की तहसीलें बसवा, दौसा,सिकराय, महुवा, लालसोट, लवाण व नांगलराजावतान में जनाधिक्य गंभीर समस्या हैं।

जनाधिक्य से अध्ययन क्षेत्र के पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हैं। जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण पर प्रभाव पड़ा है। खाद्यान्नों की पूर्ति हेतु भूमि का उपयोग बढ़ता जा रहा हैं। किसान अधिक पैदावार उपजाने हेतु अधिक मात्रा में रासायनिक खादों का प्रयोग कर रहा हैं। जिससे मृदा उर्वरता कमजोर हो गयी है। मौसम के अनुसार फसलों का रूपान्तरण करता हैं। विगत वर्षो में तापमान में वृद्धि हुयी है। वर्षा की कमी से जलसंकट गहरा गया हैं। जिससे कृषि कार्य प्रभावित हुआ हैं। जिले में फ्लोराइड तथा लवणीय सान्द्रता की समस्या बन गयी हैं। जिससे जिले में

कृषि अयोग्य भूमि का विस्तार हो रहा हैं।वर्ष 2010–11 में कृषि अयोग्य भूमि 10.82 प्रतिशत थी जो वर्ष 2014–15 में बढ़कर 11.56 प्रतिशत हो गयी।

उद्योगो व परिवहन के साधनों में वृद्धि हुयी है। जिससे क्षेत्र में ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण की समस्या बनी हुयी हैं। परिवहन के साधन वर्ष 2010–11 में 113920 थे जो वर्ष 2014–15 में बढ़कर के 193323 हो गये। वायु प्रदूषण जिलें मे एक बड़ा रिस्क फैक्टर हैं। आई सी आर रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश के दौसा जिले में अस्थमा के मरीज सबसे अधिक प्रति लाख पर 1320 हैं।

वायु प्रदूषण के लिहाज से दौसा राज्य में प्रथम स्थान पर है। जिले में अस्थमा के मरीजों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।जिलें में 55 उद्योग स्थापित हैं। इन उद्योगों के अपशिष्ट पदार्थो व जहरीली धुआँ से पर्यावरण प्रदूषण का स्तर बढ़ा है।

औद्योगिक अपशिष्ट तथा फैक्ट्रियों की चिमनियों से निकलने वाली जहरीली गैसे नाइट्रोजन ऑक्साइड, लेड ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर ऑक्साइड जैसी जहरीली गैसो से क्षेत्र निवासी अगिनत बिमारिया जैसे उच्च रक्तचाप, तनाव, श्रवण शक्ति का ह्रास, पेचिस, अस्थमा, त्वचा रोग, गुर्दे के रोग, हृदय रोग, नेत्र रोग, शारीरिक व मानसिक विकास बाधित होना, फ्लोराइड के अधिकता से जोडो में दर्द तथा हड्डियों का मुडाव सिलिकोसिस जैसी भयानक बिमारिया क्षेत्र में अपना घर बना चुकी हैं। सिकराय तहसील का पत्थर निकासी उद्योग से सिलिकोसिस बीमारी का सामना करना पड़ रहा है।

पर्यावरण के ह्रास से संसाधन सीमित रह गये है और लोग अधिक है जिससे पुर्नभरण की समस्या पैदा हो रही हैं।

पर्यावरण अवनयन से क्षेत्र की जैव विविधता तथा उनकी जीवन शैली पर भी प्रभाव पडा है और उनके संरक्षण से भी बाधा उत्पन्न हुयी है। जिससे पर्यावरण सन्तुलन बिगडता जा रहा हैं।

जनाधिक्य से शहरीकरण तथा औद्योगिकरण का तीव्रगति से विस्तार हुआ तथा वनोन्मूलन किया गया। जिस कारण पर्यावरण अवनयन हुआ है।

सुझाव एवं उपाय

- परिवार कल्याण योजनाओं को जनमानस तक पहुचाना।
- पर्यावरण शिक्षा का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार करना।
- जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना।
- कृषि हेतु जैविक खाद के उपयोग पर बल देना।
- पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी एवं वैज्ञानिक उपाय खोजना।
- वृक्षारोपण पर अधिकाधिक बल देना।
- बच्चा एक ही अच्छा के अभियान के तहत सरकार द्वारा एक बच्चे की नीति वाला कानून लागू करना चाहिए।
- पॉलीथीन व प्लास्टिक वस्तुओं का अंधाधुन्ध प्रयोग पर रोक लगाना।
- सरकार द्वारा कठोर कानून बनाया जाए व कानून को धरातल पटल पर शक्ति से लागू किया जाना चाहिए।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या बहुत तेज बढ़ रही है। जनसंख्या की मांग की पूर्ति हेतु कृषि विस्तार वनोन्मूलन नगरीकरण तथा औद्योगिकरण आदि कार्य करने पड़ रहे है। अध्ययन क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण से घातक बीमारियों का सामना करना पड़ रहा हैं। जनसंख्या के नियंत्रण तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु सरकार को कठोर कदम उठाना चाहिए। आज आवश्यकता है कि बढ़ती जनसंख्या पर कारगर रोक लगायी जाए ताकि वर्तमान एवं भविष्य मे आने वाली मानव पीढ़ियों को स्वच्छ पर्यावरण में जीवन जाने का अवसर मिल सकें।

संदर्भ

- राजस्थान जनगणना रिपोर्ट, 2011
- दौसा सांख्यिकीय विभाग, दौसा
- सक्सेना, हरिमोहन (2012), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- शर्मा, बी. एल. (1991), मृदा विज्ञान, वसुन्दरा प्रकाशन, गोरखपुर।
- ओझा, एस. के. पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण
- मामोरिया, चतुर्भुज डॉ एवं मिश्रा पी. जे. डॉ, भारत का भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
- कपूर, सुदर्शन (1974) "भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- सिंह, सविन्द्र (2010), पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- हुसैन माजिद, सिंह रमेश (2008), Me Graw Hill Education (India) Private Limited, New Delhi
- Population facts & figures rajasthan (1961-2001)
- NCERT BOOKS